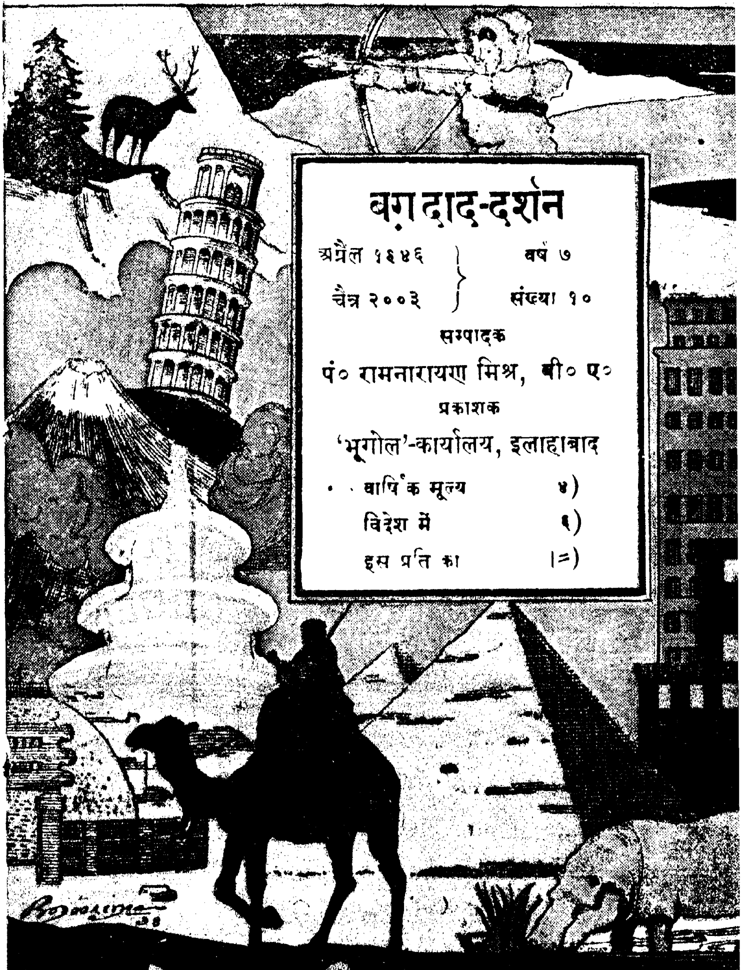
देश दर्शन

पूर्ण संख्या—७७



बग़दाद-दर्शन

अप्रैल १९४६	वर्ष ७
चैत्र २००३	संख्या १०

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

'भूगोल'-कार्यालय, इलाहाबाद

वार्षिक मूल्य	४)
विदेश में	६)
इस प्रति का	।=)

भूगोल कार्यालय — प्रयाग

विषय-सूची

[शेष कबर के तीसरे पृष्ठ पर]

बग़दाद

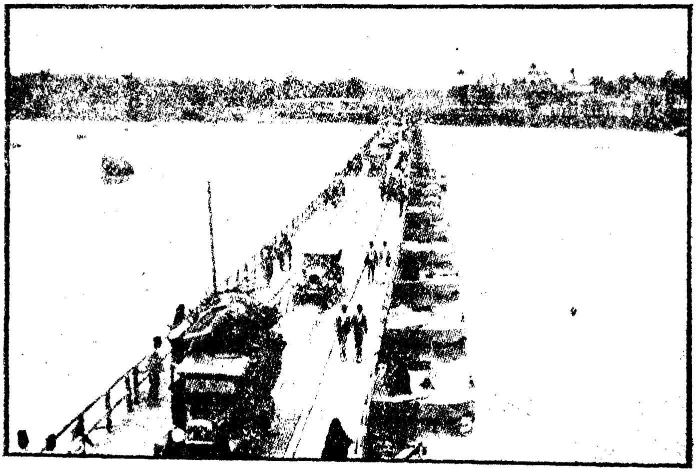
प्राचीन इतिहास की एक झलक

लगभग चार हज़ार ई० पूर्व मेसोपोटामियां और इजिप्ट में दो जातियां रहती थीं इनको 'समर' और 'अक्काद' कहते थे, ये तो ठीक तरह से नहीं मालूम कि, ये जातियाँ आईं कहाँ से लेकिन ऐसा कहा जाता है कि ये एक पर्वतीय प्रदेश से आकर यहाँ बस गये थे, उस समय उनकी अपनी सभ्यता भी थी जिसे यहाँ कि उपजाऊ भूमि में और अधिक विकसित करने का उन्हें अवसर मिला।

मेसोपोटामियाँ जो अपने अरबी नाम 'ईराक़' से प्रसिद्ध है,.'दजला' और 'फ़रात' दो बड़ी और प्राचीन नदियों के बीच स्थित होने के कारण संसार के सबसे अधिक उपजाऊ प्रदेशों में से एक है।

'दजला' टाइग्रिस का अरबी नाम है, समर लोग इसे अपनी पुरानी भाषा में 'इदिकला' कहते थे और बाद में यह 'दिकलात' कही जाने लगी थी, इसी शब्द को लेकर फ़ारसी में 'तिगरा' और अन्त में 'टाइग्रिस' नाम पड़ गया।

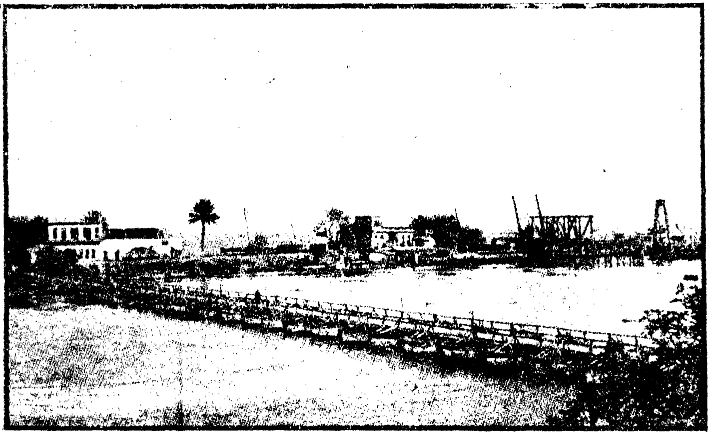
'फ़रात' नदी को सुमेर लोग 'पुरनन' पुकारते थे या कभी कभी केवल 'पुर' ही कहते थे, 'पुर' का अर्थ है 'जल' और 'पुरनन' का अधिक जल, फ़रात तो इसका अरबी नाम है जिसे ग्रीक 'यूफ्रेटिस' कहने लगे।



दजला नदी पर बना हुआ बग़दाद का माड पुल।

इराक के अन्तर्गत इस समय प्राचीन 'केल्डिया' 'बैबीलोनिया और सीरिया के प्रदेश हैं, बैबीलोन के अर्थ होते हैं—'देवताओं का द्वार' असीरिया, 'असूर'

नगर था, जहाँ पर 'असुर देवता की उपासना केन्द्रित थी चारों तरफ के प्रान्त को कहते थे।



बग़दाद का फलूजा पुल।

असीरियन जो अत्यंत वीर और युद्ध-प्रिय थे 'सेमेटिक' जाति के थे, बेबिलोनियन और केल्डियन सुमेर जाति के इन्हें संस्कृति से प्रेम और ज्ञात विद्याओं का ज्ञान था इन्होंने एक प्रकार की कोणाकार लिपि का भी आविष्कार किया था।

निमरोद ने २,१०० ई० पू०, में 'बैबोलोन' का निर्माण, किया, इसी समय में 'केल्डिया' के 'डर' नगर

में यहूदी जाति के पूर्व पुरुष 'अबराक' का जन्म हुआ था, उसे जेरूसेलेम के सालिया राजा ने शरण दी, वहाँ वह और उसके अनुयायी वहाँ के निवासियों को भगाकर स्वयं रहने लगे उसके बाद सारी दुनियां में इधर उधर बिखर गये।



बगदाद के पास दजला नदी में चलने वाली कूफा (गोल) नाव

लगभग सौ वर्ष बाद बैबिलोन में 'हम्मूराबी' प्रसिद्ध राजा हुआ, उसके बनाये हुये नियम-क़ानून अपनी अद्भुत मनोरञ्जकता के कारण प्रसिद्ध हैं, उसके

बग़दाद-दर्शन

क़ानून में यदि किसी ने किसी भलेमानस के अंग को क्षति पहुंचाई तो उसके दण्ड स्वरूप उस व्यक्ति के उसी या जाता था।



बग़दाद के पास मिट्टी निकाल कर एक नहर की सफाई की जा रही है।

१६००—६०० ई० पू०, में असीरियन लोगों का प्रभुत्व बढ़ा उनकी संस्कृति, भाषा और धर्म बेबिलोनियनों की तरह ही थे, तिगलथ पिलेसर प्रथम, साल मनेसर चतुर्थ, सरगाँन आदि अनेक राजा हुए जिन्होंने असीरिया

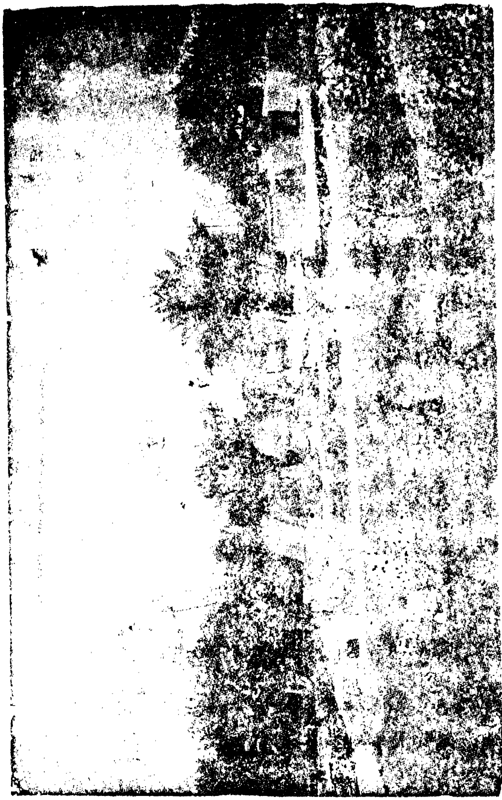
और बेबीलोन के महत्व को बढ़ाया और अपनी संस्कृति और प्रभुता का झंडा मिश्र तक फहराया, ६६८ ई०पू०, के लगभग असुर-बनी-पाल अत्यन्त वीर साहित्य एवं कला का प्रेमी राजा हुआ, उनकी स्थापित की हुई 'मिट्टी की टिकियों पर लिखी हुई पुस्तकों का पुस्तकालय प्रसिद्ध है।

६०६ ई० पू०, में असीरियन राजाओं के अशक्त होने पर 'शैल्डियन' का प्रभुत्व बढ़ा और असीरियन साम्राज्य मिट गया, इस काल में 'बेबिलोन नगर' का पुनर्निमाता हुआ।

५३९ ई० पू०, 'साइरस' ने बेबिलियनों को हरा कर पार्सियन साम्राज्य की नींव डाली, इसी वंश में दारा महान हुआ ग्रीक लोगों से जिसका युद्ध हुआ—कुछ काल के लिये ग्रीक लोगों का अधिकार रहा, १०० ई० पू०, 'पार्सियन्स' ने ग्रीकों को हटाया और ई राजधानी 'ज़ेसीफ़ोन' की नींव डाली इस लाभ की नयी शक्ति द्वारा 'ज़ेसीफ़ोन' नष्ट भ्रष्ट हुआ और पारसी के साम्राज्य छिन्न भिन्न हो गया।

बग़दाद की नींव अब्बासी ख़लीफ़ा मन्सूर ने ७६२

ई० में डाली, उसने एक लाख कारीगरों को लगातार



बग़दाद के पास एक गाँव का दृश्य

काम में लगाये रक्खा जब तक कि ७६६ ई० में नगर

बनकर तैयार न हो गया इसमें लगभग ९ लाख पौंड खर्च का अनुमान लगाया जाता है। उसने इसका नाम दार-ए-इस्लाम—शान्ति का नगर रक्खा लेकिन बाद में एक धार्मिक भिक्षु के नाम पर इसके नाम बग़दाद का चलन हो गया। धीरे धीरे बगदाद एक बड़े नगर में परिवर्तित होता गया और सजधज एवं गौरव में 'निनेवेह', बेबिलोन, से लूशिया और ज़ोसफ़ान आदि प्राचीन नगरों से भी बढ़ गया।

खलीफ़ा हारूं-एल-रशीद के समय ७०८—८०९ ई० सन् में इसकी महत्ता पराकाष्ठा को पहुँच गयी, संसार भर के विद्वानों, संस्कृतियों और विद्याओं का केन्द्र था। खलीफ़ा हारूं की मृत्यु के बाद बगदाद की अवनति होती गयी पहले तो सन् १७०१ ई० में यह सेलजुक तुर्कों के हाथ में आया, १२५८ ई० में हलाकू इस पर आधिपत्य किया और नगर को विनष्ट किया। १३५३ ई० में तैमूरलंग के हाथों में दुर्गति को प्राप्त हुआ। इसके बाद से बगदाद का इतिहास ब्रिटिश आधिपत्य के काल तक निरन्तर गृहयुद्धों का इतिहास है।

सन् १९१४ में तुर्की ने मित्रों के विरुद्ध युद्ध घोषणा

की। ब्रिटिश सेना ने बसरा में अधिकार किया कुछ समय तक तुर्क विजयी रहे लेकिन ११ मार्च १९१७ में बगदाद ब्रिटिश और भारतीय दस्तों द्वारा अधिकार में कर लिया गया। तुर्कों ने ३० अक्तूबर १९१८ को घुटने टेक दिये।

वर्तमान बग़दाद

आजकल का सुन्दर सुनहरे गुम्बदों वाला बगदाद ख़लीफ़ा मन्सूर द्वारा ७६२ ई० में दजला नदी के कछार पर वृत्ताकार में दो पुराने पार्मियन गाँव 'बगदाद' और 'करख' के स्थान पर बसाया गया था।

चक्राकार यह 'शान्ति का नगर'—दार-एल-इस्लाम अब भी अलिफ लैला (अरेबियन नाइट्स) के संस्मरणों से भरा है, इसी का रोमांचक सड़कों और गलियों में ख़लीफ़ा हारून अपनी प्रजा का दुख-दर्द जानने के लिये वेश बदल कर रात में घूमते थे, केवल बग़दाद ही ऐसा अरबी नगर है जो नये ज़माने की विशालता द्वारा विकृत नहीं हो पाया है, वहीं पुरानी गलियाँ जिन पर ख़लीफ़ा हारून अपने वज़ीर के साथ रात में घूमते थे—वही जालीदार खिड़कियाँ वही बुरक़ा पहने स्त्रियाँ

के बगदाद की संकरी और धुंधली रोशनी वाले बाज़ारों में घूमने से अब भी शहरज़ादी सिन्नबाद, बग़दाद का चोर' अलिफ लैला की कल्पना सरकार हो जाती है।

दो नदियों की इस भूमि की सैर का सबसे सुन्दर समय अक्तूबर और अप्रैल के बीच का है जब तक गरमी न पड़े, ग्रीष्म यहाँ की बहुत कराग़ी होती है।

दजला नदी के किनारे बसे हुये खलीफ़ाओं का यह नगर ३३–३४ अक्षांशों और ४४–४६ देशान्तरों के बीच बसा है, इसकी जन-संख्या लगभग ३००,००० है जिसमें इसाईयों और अन्य धर्मावलम्बियों के अलावा मुसलमानों की संख्या ही विशेष है।

तुर्की की हार के बाद इराक अंग्रेज़ों के 'मैन्डेट' में था लेकिन १९२० के विद्रोह के बाद 'मित्रता की सन्धि' ने 'मैन्डेट' का स्थान ले लिया है।

नयी सरकार के अधिपत्य में ईराक प्रगति कर रहा है, श्रीमान फैज़ल प्रथम, उदार विचार वाले और योग्य शासक है, अपने मन्त्रियो कि पार्लियामेंट के प्रति उत्तरदायी है, की सहायता से राज्यकार्य चलाते हैं, ब्रिटिश सरकार की तरफ से एक हाई कमिश्नर नियुक्त है।

बग़दाद-दर्शन

उपज अच्छी है, गेहूं, जौ, चावल, मक्का और कपास उत्पन्न किये जाते हैं, संसार में खपने वाले खजूर का ७५ प्रतिशत केवल बसरा से प्राप्त होता है अमेरिका का यहाँ के व्यापार में बहुत हाथ है।

तेल यहाँ बहुतायत से पाया जाता है जो पाइपों की पंक्तियों द्वारा समुद्रतट (भूमध्य सागर) तक पहुँचाया जाता है।

———

शाँति का नगर बग़दाद

खलीफा मन्सूर द्वारा निर्मित बगदाद का कुछ भी चिन्ह शेष नहीं है नगर के चारों ओर रक्षार्थ तीन दिवारों का घेरा था सब प्रकार के व्यापार और रोज़गार नगर रक्षक दीवारों के बाहर पनपते थे नगर कोट के बाहर व्यापारियों और दूकानदारों का शहर सा बसा था जिसे 'करख' पुकारते थे और वह बगदाद का व्यापार केन्द्र शताब्दियों तक बना रहा।

बगदाद भ्रमण का सही आनंद धीरे धीरे देखने

में और वह भी पैदल देखने में मिल सकता है ऐसे तो टैक्सी घोड़ा गाड़ी आदि का समुचित प्रबन्ध है।

सिदियन जाति के चाँदी के कारीगर

दजला पर बने हुये पुल को पार करने पर रिवर स्ट्रीट मिलता है जिसके दोनों ओर बगदाद के प्रसिद्ध सुब्बी सुनारों की दुकाने मिलती हैं वे चाँदी पर हब्बी बत्तियाँ और नाम आदि खोदने में सिद्धहस्त है आगे चलकर बैंक स्ट्रीट है जहाँ बगदाद के तमाम बैंक है जहाँ रुपयों के लेन देन होता है और जहाँ तहाँ सटारियों के मनोरञ्जनार्थ 'काफी' की दूकानें भी हैं।

मीर जान मस्जिद

'एक्सचेंज स्क्वायर' जाने वाली सड़क तक जाने वाली सड़क पर चलने पर दाहिनी तरफ मीरजान मस्जिद है मध्यकाल को केवल यही मस्जिद बची है उसका मुख्य द्वार जो अनेक बार विनष्ट किया जा चुका है फिर मरम्मत किये जाने पर भी अत्यंत सुन्दर लगता है यह मस्जिद और पास का स्कूल १३५७ ई० में

मीरजान नामक एक धार्मिक व्यापारी ने जो नीच जाति का होने पर भी गवर्नर के पद तक पहुँचा था बनवाया था स्कूल में विद्यार्थियों के रहने का भी स्थान है और एक सुन्दर पुस्तकालय है।

खान ओर्तमान

सड़क के दूसरी तरफ उसी काल की बनी हुई खान ओर्तमान नाम की इमारत है जो सराय और व्यापारिक कामों में आती थी उसकी आमदनी से स्कूल और मस्जिद का खर्च चलता था इसमें ईंटों का अच्छा काम है।

आक़िल्याह मस्जिद

पास की संकरी सड़क पर आक़िल्याह मस्जिद है जो कि अब्दुल्ला एल आक़िली एक विद्वान क़ाज़ी और शिक्षक ने बनवाई थी उसकी दरगाह लकड़ी के काम की बनी है।

एल-मुस्तनसिरिआह

उसी स्थान पर मुख्य सड़क पर एक कालेज के लिये बनवाई हुयी खलीफा मुस्तसिरि आह का भवन है अब यह चुंगी घर की तरह काम में आता है इसका बारीक ईंटों का काम अब धुयें के पर्दे से छिप गया है।

सक-एल-गज़्ल मस्जिद

एक्सचेंज स्क्वायर से बाजार के सकरे रास्ते से होकर जाने के बाद सक-एल-गज्ल की मस्जित मिलती है जिसकी अब जीर्ण मीनार ही एक निशानी अब शेष है। खलीफा मुकतफी द्वारा ई० ९०२-८ में बनवाई हुयी यह मस्जिद बगदाद की इमारतों में अत्यंत महत्व पूर्ण स्थान रखती थी अब्बासी खलीफाओं के विशाल प्रसादों का यही एक केवल चिन्ह है।

सराय

बाजार के बीच में से होकर जाने से सूफी कुली द्वारा १७ वीं शताब्दी में बनबाई हुयी मस्जिद मिलती

है पहले यह तुर्की बेरकों की सूरत में था अब यहां सरकारी दफ़्तर है जहां से अकेले सफर करने वाली महिलाओं को 'भो मुत' और दूसरे जिलों में जाने का आज्ञा पत्र मिलता है राजा फैसल का राज्य भिषेक इसी के सहन में हुआ था हर जुमे को वह सराय की मस्जिद में नमाज के लिये आते हैं।

क़िला

राजा का निवास स्थान इसके पास सरिता तट पर है मैदान मस्जिद के पास से गुजर कर किले के सहन में जाना होता है यहीं पर ई० १६३७ की प्रसिद्ध प्राचीन तोप आबू खानजाना है यह जादू की शक्ति वाली समझी जाती है मुस्लिम महिलायें 'वक्त अलजियारा' के दिन यहां मोमबत्ती जलाती हैं।

हैदरख़ाना मस्जिद

दाअद पाशा द्वारा १६ वीं शताब्दी में निर्मित यह मस्जिद न्यू स्ट्रीट में है और नीले गुम्बद के कारण अत्यंत भव्य लगती है।

गलानी मस्जिद

बगदाद मुख्यतया शिया लोगों का नगर है लेकिन यहां दो सुन्नी समाधियां विशेष महत्वपूर्ण है शेख अबदुल कादिर जो मुनसैद के शासन काल में प्रसिद्ध सूफी विचारक हुये हैं जिनकी समस्त एशिया में प्रसिद्ध थी, यहां समाधिस्त हैं उनकी सन्दु जयंती के दिन समाधि के मीनार पर मशाल जलाये जाते हैं।

शेख अमर दूसरे सूफी साधु और शेख वकादिर की दरगाह, अन्नानासक शकल की मीनार के साथ 'वसतान्सी द्वार' के पास है।

ज़ुबेदह की क़ब्र

पश्चिम बगदाद स्टेशन के दाहिनो ओर अनानास की बनावट की इमारत जुबेदा की कब्र कहलाती है इस स्मृति सौंध का निर्माण कुछ अजीब ढंग पर हुआ है गुम्बद के अनानास की तरह उगरे हुये गोलाकार बनावट में सूर्य रशियों के आने जाने के लिये मार्ग है

अन्दर पहुँच कर सूर्य किरणें एक अजब सा जाल बुनती है।

'आगा कुफ' जाने वाली सड़क पर अनेक छोटी-बड़ी समाधियां हैं जिनमें शेख़ 'जनायद' १०वीं शताब्दी के एक महान सूफी बहलुल और शेख़ मारूफ़ जो ईसाई से मुसलमान हुये थे उनकी दरगाहें हैं।

बग़दाद के रोमांचक बाज़ार

रेशमी कपड़े और सिल्क आदि की बिक्री का स्थान धूमिल गोलाकार पथ से घिरा हुआ अनेक स्त्री पुरुषों की भीड़ से भरा हुआ बड़ा मनोहर दृश्य उपस्थित करता है।

दूसरे मोड़पर कसाइयों की दूकानें हैं जो ग्राहक की दृष्टि मिलते ही मुस्करा कर अपने सौदे के बिक्री हेतु बुलाते हैं

मिट्टी की चमकदार सुराहियों और दूसरे बर्तनों का ढेर—कुम्हार अपने चाक पर काम पर लगा हुआ मिलेगा।

अनाज की मण्डी अत्यंत प्राचीन दृष्य स्थानों में से है यहाँ ईराकी, भारतीय, अरब आर्मेनियन सब प्रकार के लोग ऊंटों का झुण्ड पीली ईटों का बोझ ढोते हुये गदहों की कतारें भीड़ में से रास्ता बनाते हुये मिलेंगे।

फल वालों की दूकानें ऐसी लगेंगी जैसे जवाहरातों की दूकान लाल रंग के अनार और टमाटर, पीले नाशपाती और सेब पन्ने के रंग के अंगूर।

पास ही ठठेरों की दूकानें हैं जहाँ से हर समय ठक्-ठक् ठोक-पीट की ध्वनियां आती रहती है करीब से ही हंसती खिलखिलाती चूड़ियां और कड़े खनखनाती सिल्क पोशाक की सरसराहट पैदा करती हुई ताँगे में सवार निकलती मिलेंगी गर्दन ताने हुये मुश्की घोड़े पर सवार कुर्द लोगों से भेंट होगी।

सिल्क की दुकान में इन्द्रधनुषी वर्णों का रेशम खरीदती हुई महिलाओं का झुण्ड, रास्ता साफ़ करने के लिये ऊँट सवारों का 'हा, हा, हा,' स्वर ऊँटों की गर्दनों से बंधी घण्टियों की मीठी टुन्-टुन् अत्यंत मनोहारी लगती है।

बग़दाद-दर्शन

यहाँ की महिलायें विशेतया ईसाई और यहूदी महिलायें एक प्रकार का सुरम्य रेशमी वस्त्र धारण करती हैं जिसे 'इज़्ज़ार' कहते हैं जिस सिल्क का वह बना होता है वह काफ़ी वज़नी होता है किनारे पर सुनहरा काम होता है उसकी ज़मीन हल्के गुलाबी रंग की होती है यह सिर से पांव तक ढकने वाली पोशाक होती है ईसाई स्त्रियां बिना पर्दे के रहती हैं यहूदी हलकी जाली मुँह पर डाले रहतो हैं।

बाज़ार में आगे बढ़ते जाने से रास्ता और भी संकरा धुंधला और रहस्यमय मिलता जायेगा आगे जौहरियों, सराफ़ों, स्वर्णकार और रौप्कारों की दूकानें हैं।

अन्य स्थानों में तैयार जूते मिलेंगे बग़दाद में आपके सामने ही चमड़ा तैयार किया, रंगा, काटा और जूते की शक्ल में लाया जायगा।

'क़ालीन,' बेचने वाले की आवाज़ सुनकर अलिफ़-लैला के क़ालीन का ध्यान आजायगा बग़दाद रोमंचक बाज़ारों ने बहुत कर के मध्ययुगीन खलीफ़ाओं के कल का रंग-ढंग और आकर्षण स्थित कर रक्खा है

देश दर्शन

ईराक संग्रहालय (म्यूज़ियम)

जिन किन्हीं को भी इन दो नदियों की भूमि (दि लैंड आफ़ टू रिवर्स) की महान संस्कृति और आश्चर्य-जनक इतिहास से प्रेम होगा उनके लिये बग़दाद संग्रहालय अवश्य आकर्षण की वस्तु होगा।

मुख्य द्वार से घुसते ही आपको म्यूज़ियम में संग्रहीत अमूल्य वस्तुओं के लिये अधिक परिश्रम करने वाली श्रीमती गर्टूडबेल की काँसे की मूर्ति है द्वार के दोनों तरफ मानों रक्षक रूप में—स्क्राईबदेवता 'नाबू' की विशालकाय मूर्तियाँ हैं जो किसी समय राजा 'अशुर नसीरपाल द्वितीय' और शलमनेज़र तृतीय के प्रसाद की शोभा बढ़ाती थी।

म्यूज़ियम की दर्शनीय वस्तुओं में अधिकतया 'उर' की खुदाई से प्राप्त हुई हैं प्राङ्गण की ओर खुलते हुये तीन कमरे हैं इनमें से एक तो वह है जहाँ श्रीमती गर्ट्रूड काम करती थीं और उनकी श्री सार्जेंट द्वारा अंकित चित्र की प्रतिलिपि टंगी है कमरे के बीचोबीच में 'ज़िग्ग्रात' 'उर' से प्राप्त नीली आभा वाले ईंटों पर

देवता 'नाना' की मस्तक विहीन मूर्ति रक्खी है कमरे के पिछले भाग में एक प्रस्तर खण्ड है जिस पर जलदेवता की मूर्ति अंकित है उनके बगल से 'सरिता द्वय' दजला और फ़रात निकलती हुई दिखाई गई हैं।

दूसरे कमरे में बैबीलोन से प्राप्त चमकीले नील-प्रस्तर की पृष्ट भूमि में सुनहरे पीले वर्ण वाली एक सुन्दर सिंहमूर्ति है और भी अन्य वस्तुएं हैं जिनका वर्गीकरण नहीं हो सका है।

तीसरे कमरे में असीरियन संस्कृति के चिन्हावशेष हैं और उनमें एक मुस्कराते हुये राजा का अत्यंत सजीव मस्तक भाग है। भीतरी कमरे में अरब कला का प्रदर्शन करने वाली वस्तुएं हैं एक कोने में संगमरमर का सुन्दर मेहराब जो खसाकी मस्जिद से लाया गया है, ख़लीफ़ा मन्सूर के काल (७५४-७७६ ई० स० का बताया जाता है।

म्यूज़ियम की महत्व पूर्व प्रदर्शनों को जहां रक्खा गया है वह कमरा ऊपर के भाग में है। द्वार के सामने ही एक छोटे से सन्दूक में राजकुमार 'भेस-कालुम-दग' का प्रसिद्ध स्वर्ण मुकुट है जो 'उर' में बनी, ३५०० ई०

पू० की नरेशों की कब्रों से प्राप्त हुआ है यहीं उक्त राजकुमार की स्वर्ण तलवार जिसकी मूठ सीपी जड़ित और म्यान सोने की है।

संग्रहालय के अत्यंत आकर्षक प्रदर्शनों में रानी की स्वर्ण श्रृंगार मञ्जूषा है जो एक कोण के रूप में है इसमें श्रृंगार और स्नान में व्यवहृत अनेक छोटी मोटी वस्तुएं जो ३५०० ई० पू० में प्रयोग में लाई जाती थी रखी हैं एक सोने का 'हेयरपिन' जिसके ऊपर एक लघुकाय बानर की मूर्ति भी उस डिब्बे में है वहीं पर सेविकाओं का शीश-परिधान पहने हुये एक स्त्री का मस्तक है जो 'उर' के 'मृत्यु कुण्ड' से प्राप्त हुआ था।

मध्य में एक सन्दूक में 'उर' से प्राप्त प्रसिद्ध सोने की तलवार है उसकी मूठ लैपिस लैजुली पत्थर की है यही सब अमूल्य वस्तुएं थीं जिन्होंने संसार के सामने एक ऐसी संस्कृति को ला रखा जो भूत के धुंधले पर्दे में छिपी थी।

कमरे में रखी अन्य वस्तुएं जो महत्व की हैं उनमें उस काल की नाव का एक चांदी का नमूना चांदी का एक सिंह मस्तक, अनेक आभूषण—सोने के भारी वक्र-

बग़दान-दर्शन

चन्द्राकार (चन्द्रमा की देवी नीन गाल के श्रद्धारूप) कर्णाभूषण-चांदी की अंगूठियां, एक मां और बच्चे की प्रतिमा आदि का नाम लिया जा सकता है।

कमरे के अन्तिम भाग में 'उर' के विशाल-मत्यु-कुण्ड से प्राप्त अद्भुद सारंगी है पास ही एक साँड़ का सोने का सिर है जिसकी कारीगरी प्रशंसनीय है।

'अल-उबैद' से प्राप्त वस्तुएँ

'उर' के प्रथम राजा 'आ—अन्नी-पद-दा' द्वारा देवी 'निन-केर-सैग' के लिये निर्मित मन्दिर (३८०० ई० पू०) से प्राप्त दूध दुहने का एक दृश्य का चित्र, गुलाबी आभा वाली सीपियों से जड़े हुये उसी मन्दिर के स्तम्भों के कुछ भाग, चिड़िया के आकार का मिट्टी का दीपक, बत्तख की शक्ल के पत्थर के बांट।

'किश' से प्राप्त

मिट्टी के बरतन, हाम्मूराबी के समय के, बारहसिंहे को भक्षण करते हुये सिंह का एक सुन्दर ताम्रचित्र।

माड का पुल

सर स्टैनली माड, जिन्होंने ब्रिटिश सेना का सन् १४ की लड़ाई में बग़दाद में संचालन करते हुये प्रवेश किया था की स्मृति में बनाया गया था । उनका स्मारक रेज़ीडेंसी के बाहर बना है ।

सूर्यास्त के समय पुल पार करने से शहर का बड़ा अनोखा और लुभावना दृश्य दिखाई पड़ेगा ऐसा मालूम पड़ेगा कि सचमुच कोई क़िस्सा अलिफ लैला वाले नगर में प्रवेश कर रहा है—पार्थिव लोग, मेड इलाची मेसोपोटामियावासी हर वर्ण, हर राष्ट्रीयता के लोग ऊंटों की क़तार, गदहों, खच्चरों बकरियों का झुण्ड, शानदार घोड़ों पर सवार शेख और कुर्द, तीव्र वायु के झकोरों से उड़ते हुये रेशमी 'इज्ज़ार पहने हुये यहूदी औरतें, काले बुर्कों से ढकी हुयी मुस्लिम महिलाएं, सब बग़दाद के गुम्बजों और मीनारों के पीछे डूबते हुये सूरज की सुनहरी किरणों से नहाये हुये अत्यंत चित्ताकर्षक लगेंगे ।

बग़दाद-दर्शन

'कादी मायन'

तीसरा पवित्र नगर

अपने भव्य स्वर्ण मण्डित गुम्बदों और मीनारों सहित कादीमायन ही बग़दाद भर में एक ऐसा स्मारक है जिसे देख कर एक साथ प्राच्य गौरव उसकी अमूल्य संस्कृति ख़लीफ़ा हारूंरशीद और अलिफ़लैला की १००१ रातों का चित्र सामने आ जाता है।

बग़दाद में पश्चिम की ओर से प्रवेश करने से इस नगर के स्वर्ण खचित कलशों की आभा हमारा ध्यान आकर्षित कर लेती है यहाँ पर मूसा-एल-कादीम सप्तम इमाम (८०२ ई० स०) और मुहम्मद-एल-तक़ी नवम् इमाम की समाधि है—इसलिये उसका नाम कादी मायन पड़ा कादी मायन के अर्थ हैं 'ख़ुदा' के बन्दे मस्जिद में विदेशियों को नहीं जाने दिया जाता पड़ोस के मकान की छत से देखने से इसका आश्चर्यजनक दृश्य दिखाई पड़ सकता है।

ज़ेसीफ़ोन और सेलूशिया

'प्राच्य भूमि का अद्भुत मेहराब'

जेसीफ़ोन का मेहराब प्राचीन काल के भग्नावशेषों में से अत्यंत महत्वपूर्ण वस्तु है पुरानी इमारत के सामने की चौड़ाई ३१२ फीट थी मध्य में विशाल गोल मेहराब जो ८३ फीट चौड़ी और १०२ फीट ऊँची थी अब बहुत कुछ नष्ट-भ्रष्ट हो गया है दो पृष्ट-भीतों में से एक सन् १८६४ में तुर्कों द्वारा मुहम्मद के नाई सुलेमानपाक के गांव बनाने के लिये ढा दी गई थी दूसरी में दो बड़े-बड़े दरार हैं जो एक भूकम्प के धक्के का रास्ता देख रहे हैं कि कब इस भग्नावशेष को धराशाई कर दे।

जैसीफ़ोन जाने का रास्ता हिनायदी के हवाई अड्डे से होकर है।

जैसीफ़ोन का निर्माण पारसीक राजाओं द्वारा १२९ ई० स० में हुआ था १६२ ई० स० में जैसीफ़ोन और सेलूशिया दोनों रोमनों द्वारा लूटे और बर्बाद कर दिये गये। २२६ ई० स० में राज सैपर ने इसे अपनी शरद राजधानी बनाया। राजा कोश्रो प्रथम एक महल

५५० ई० में बनवाया था जिसका एक मात्र अवशेष वह प्रसिद्ध मेहराब हैं जिसे अरब लोग 'तख्ते-किश्रा' (मोन आफ़ कोस्रो) कहते हैं।

दजला के उस पार जेसीफ़ोन के सामने सेल्यूशिया नगर के अवशेष हैं इसकी नीवें सिकन्दर महान की मृत्यु के बाद उसके सेनापति सेल्यूकस ने डाली थी, इसकी खुदाई अभी नहीं हुयी है। यह बग़दाद से २० मील पर है।

आगा कुफ़

आगा कुफ़ के खण्डहर बग़दाद में पश्चिम की ओर से घुसने पर बहुत दूर से दिखाई देते हैं दूर से इसकी आकृति एक बैठे हुये सिंह की सी लगती है यह 'कज्जा-ईट' के लुप्त नगर की 'जिगू रात' मीनार है और 'दर कुरीगलज़ू' कहलाती है ईटों के काम का एक विशाल स्तूप ईटों की तहों के बीच पड़ी हुयी बनाते समय की चटाइयों को खाते हुये बकरियों और गायों को अब भी देखा जा सकता है अब चिड़ियें और गीदड़ यहां के निवासी हैं इसको घेरे हुये छोटे मिट्टी के ढेरों की कभी

खुदाई नहीं हुई वर्षाकाल के बाद कभी-कभी बर्तनों के टुकड़े शीशे रोमन सिक्के प्रायः पाये गये हैं यह स्थान बग़दाद से १० मील दूर है।

बैबीलोनः—महान नगर

बैबीलोनिया और असीरिया की पूर्वतम संस्कृति का विकास दजला औ फ़रात के तट पर हुआ दोनों नदियों के बीच की भूमि सुमेर और अक्काद नाम के दो राज्यों में विभक्त थी अक्का अथवा सेमाइट उत्तर में और सुमेर दक्षिण में।

सुमेरिचनों के आने के पहले यहां की दलदली भूमि में आदिम लोग रहते थे जिनके हाथ की कारीगरी चित्रकारी से भरे हुये सुन्दर मिट्टी के बर्तनों के रूप में देखी जा सकती है जो कि 'एल-उबैद' में पाये गये हैं और जिनके नमूने ईराक म्यूज़ियम में रखे हैं।

'अदन का बगीचा' यहीं क़ुरनाह के दलदल में स्थित था ऐसा कहा जाता है।

सुमेर और अक्काद के अतिरिक्त अन्य नगरों की

अपनी अलग स्वतंत्र रियासतें थीं 'ग्यूडिया' जिसकी प्रतिमा 'लूव्रे म्यूज़ियम में रखी है, पहला सेमेटिक राजा था जिसने सब छोटे छोटे राज्यों को मिला दिया था। सुमेर और अक्काद के राजा की पदवी ग्रहण की थी २०६७ ई० पू० बैबीलोन एक महत्व का नगर-राज्य हो गया था। एक नये राज्यवंश की स्थापना हुई थी जिसका प्रभावशाली राजा हम्मूराबी हुआ जिसने प्रसिद्ध राज्य क़ानून बनाये थे।

१८०६-१२२६ ई० पू० तक बेबीलो कज्ज़ाइट लोगों के हाथों में रहा इस समय बेबीलोन पतन की ओर अग्रसर हो रहा था। इस काल तक असीरिया अन्य प्रबल शक्ति हो गया था लेकिन तब भी बैबीलोन समस्त एशिया के लिये पुण्य-नगर था। लेकिन असीरियन और बैबीलोनियन के पुराने संघर्षों का अन्त ६८६ ई० पू० में हुआ जब कि सेन्नाचेरिब बेबीलोन पर चढ़ आया था और वहां के मकान मन्दिर देव प्रतिमाओं सब को नष्ट भ्रष्ट कर दिया था।

६०६ ई० पू० में असीरियनों की साम्राज्य सत्ता भी शिथिल होने लगी और शैल्डन को नया राजवंश सिंहा-

सनारूढ़ हुआ नेबोपालस्सर और उसका पुत्र नेबूचदनेज़र अत्यंत प्रसिद्ध नरेश हुये जिन्होंने जेरूसलेम पर आधिपत्य जमाया था और यहूदियों को बन्दी बना कर बेबीलोन लाया गया था बैबीलोन को महान बनाने में इन पिता-पुत्रों का बहुत हाथ। दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक बैबीलोन का झूला-बाग (हैंगिंग गोर्डन्स आफ) बैबीलोन इन्हीं का बनवाया हुआ है।

ईसा के ५०० वर्ष पूर्व इतिहास लेखक हेरो जेरस ने अत्यंत प्रशंसात्मक शब्दों में बैबीलोन का वर्णन किया है लेकिन उस महातनमार के खंडहर ही बाकी हैं जो यात्री देखने जाते हैं।

साइरस, पर्सिया नरेश ने बैबीलोनिया को जीता और बन्दी यहूदियों को मुक्त किया। दारा महान उसी वंश में हुआ है। दारा के २०० वर्ष बाद बैबीलोन को सिकन्दर ने जीता और उसके सेनापति सेल्यूकस ने दजला के तटपर नयी राजधानी सेल्यूशिया की नींव डाली। यह है बैबीलोनिया के ४००० वर्ष के गौरवपूर्ण दिनों की कथा।

बग़दाद-दर्शन

बैबीलोन बग़दाद से ६५ मील है पूसेफ़िवाह नहर को पार करने पर दाहिने तरफ क्षितिज की ओर बैबीलोनिया नगर के भग्नावशेष दिखाई पड़ेंगे यह स्थान 'तेल-डेचर' कहलाता है 'खान महाविल' पार करने के बाद 'बाब-इळ' दुर्ग के खण्डहर दिखाई पड़ेंगे दुर्ग के नीचे मिट्टी के ढूहे दिखाई पड़ेंगे 'एल-कसर' का क़िला जिसे नेबूचदनेज्ज़ार ने बनवाया था अपनी पूर्व गौरव कथा कहता दिखाई देगा। उसके उत्तर में 'बैबीलोन का प्रसिद्ध सिंह' काले पत्थर का बना हुआ दिखाई देगा। दक्षिण की ओर राजा नेबूचदनेज्ज़ार के महल के खण्डहर है उसके पास ही प्रसिद्ध भोज गृह (बैंक्वेटिंग हाल) है जिसकी दीवार पर बेलशज़ार और उसके उत्सव-प्रिय साथियों ने बैबीलोन के पतन की लिखावट भाग्य के हाथों लिखते देखी थी।

उत्तर-पूर्वी कोने में ईटों-मिट्टी के ढेर रहते हुये मेहराब प्रसिद्ध आकाश स्थित उद्यान हैंगिंग गार्डेन के अवशेष हैं जिसे 'नेबूशदनेज्ज़र' ने अपनी प्रिय पत्नी 'मेदियान रानी' की पार्वतीय सुषमा निरखते रहने की इच्छा पूर्ण करने के लिये बनवाया था इस ३५० फीट

ऊँचे उद्यान की सिंचाई अद्भुद प्रकार हाइड्रालि पापों से होती थी उद्यान में एक प्रकार के पुष्प लता वल्लरियां यहां तक फलों वाले वृक्ष भी थे। इन्हीं लता कुञ्जों के बीच इन्द्र के नन्दन कानन की सुषमा में भी बढ़कर शोभा वाले उद्यान में रानी अपना ग्रीष्मावास रखती थी।

राज्य प्रसाद के उत्तरी-पूर्वी कोण में 'इश्तार द्वार' है उसी के पास इश्तार प्रेम की देवी का मन्दिर है।

इस स्थान से दाहिनी ओर एक खड्ड में एक चौकोर ढेर बैबेल की स्मृति रूप पड़ा मिलेगा।

'एल-कालर' के पश्चिम की ओर ग्रीष्म प्रासाद के खण्डहर मिलेंगे सिकन्दर इसी महल में मरा था।

———

किश

(तेल-उहैमिर)

बैबीलोन के बाद प्राचीन काल का यह दूसरा प्रमुख नगर था यहाँ चार राजवंशों ने शासन किया था खुदाई में एक शाही महल का पता लगा है जो ३१०० ई० पू० के लगभग का बना बताया जाता है किशअक्काद लोगों की राजधानी रहा है इसलिये उर, एरेच आदि सुमेरियन रियासतों से इसका निरन्तर संघर्ष रहा है, किश के पास ही किले बन्द शहर 'कुरग कलाभा' के खण्डहर हैं, ई० पू० २००० में असीरिया और बैबीलोनियों के युद्ध काल में यह महत्वपूर्ण नगर था।

बिर्स निमरूद

बिर्स निमरूद जिसका पुराना नाम 'बोर्सिपा' था बैबीलोन के पड़ोस का नगर भाग था, ई० पू० १२००-८०० में राज्यवंश के रहने का स्थान रहा है, यह स्थान बगदाद से ७ मील दूर है।

शैल्डीज़ राज्यवंश का प्रसिद्ध नगर 'उर'

'उर' अब्राहम का जन्म स्थान है, 'उर' नगर दजला और फ़रात के मुहाने पर बसा था, शैल्डियनों के पहले यहां आदिम लोग रहते थे जिनके बनाये हुये मिट्टी के बर्तन बग़दाद के संग्रहालय में रक्खे हैं—आदिम निवासियों की भूमि में अक्काद और सुमेर एक के बाद एक आते गये और बसते गये अक्कादों ने ही यहाँ गेहूँ और जो उपजाना आरम्भ किया था, वे 'ईश्वर के पुत्र' कहलाते थे सुमेर 'मनुष्यों के पुत्र' कहलाते थे उनका निवास स्थान 'पर्सियन 'गल्फ' के पास था, अक्काद लोग खेतिहर थे और सुमेर चरवाहे दोनों के काम के साधनों में संघर्ष था इस लिये हमेशा लड़ाई रहती—सुमेरियन सभ्यता में महान जल-प्लावन था प्रलय इसी समय हुआ था, सुमेरों की संस्कृति और सभ्यता मिश्र और ग्रीस की सभ्यता से ५,५०० वर्ष पुरानी है।

'उर' का इतिहास ईराक म्यूज़ियम में प्राप्त मिट्टी की चौकोर टिकियों में खुदा हुआ मिलता है और सच तो

नष्ट हो गया परन्तु राजाओं की नामावली का पता इनसे लग जाता है।

जल-प्लावन या प्रलय के पहले के १० नरेशों का नाम मिलता है इस काल की शाही कब्रों से प्राप्त वस्तुओं से पता लगता है, कि सुमेर संस्कृति और सभ्यता बहुत परिष्कृत थी, वस्तुओं में सोने और चाँदी के आभूषण, अस्त्र-शस्त्र, औज़ार पत्थर के बर्तन घोंघा और सीपी की मोहरें आदि हैं, कब्रों में सबसे अधिक आकर्षण की कब्र राजकुमार 'मेसकलाभदग' की है—शाही कब्रों के चारों ओर दूसरे लोक में उनकी सेवा टहल के लिये मृत्यु की शरण पहुँचायी हुयी सेविकाओं की कब्रें हैं जिन्हें 'विशाल मृत्यु कुण्ड' पुकारते हैं।

'उर' के प्रथम राजवंश की स्थापना 'मेस-अभी-पद्धा' नेकी थी, सुमेर और अक्काद् आरम्भ में लड़ते थे और अन्त में मेल कर लिया था, सुमेर और अक्काद् की सभ्यता का सबसे गौरव पूर्ण काल २४०० ई० पू० जब उरनम्यू राजा शासन करता था यही 'ज़िगुरात' की प्रसिद्ध मीनार, चन्द्रदेवत नन्नार और चन्द्र देवी 'नीव जल' के मन्दिरों का निर्माण कर्ता माना जा सकता है।

देश दर्शन

'उर' नगर का भग्नावशेष देखकर उसकी महान सभ्यता की याद की जा सकती है उसके विशाल मन्दिरों ऊँची मीनारों, भव्य गुम्बदों को कल्पना में ही देखा जा सकता है।

खुदाई में तीन सड़कों का पता लगा है—उनके प्राचीन नाम भी पता लगे हैं 'नवीन-पथ' 'शान्त-पथ' 'आनन्द-पथ' सड़कें चक्कर दार और संकरी हैं पशुओं द्वारा खींचे जाने वाली गाड़ियों के जाने आने के ही लिये उपयुक्त हैं--मकानो की बनावट वर्तमान बग़दाद के मकानों से बहुत कुछ मिलती जुलती है।

ज़िगुरात मीनार यहां की दर्शनीय इमारतों में सबसे अपूर्व है—उसका निचला भाग आज गहरी लाल रंगत का दिखता है लेकिन कभी यह सोने से मढ़ा था,मीनार की चोटी पर चढ़ जाने से 'उर' की सारी प्राचीन सभ्यता खुदे हुये गड्ढों और ईंटों के ढेर के रूप में दिखाई पड़ेगी 'उर' बग़दाद से २२८ मील दूर है— 'उर' जाने के लिये बग़दाद या हिल्लाह से 'उर' जंकशन पहुँचते हैं यहाँ 'उर' और 'अलडबैंद के खुले हुये

स्थान देखने को मिलते हैं वहाँ से १४ मील दूर दूसरा 'आबू शरायन' है।

आबू शरायन

यह स्थान प्राचीन एरीदूका भग्नावशेष है, एरिदू के अर्थ हैं 'सुन्दर नगर' और यह प्राचीनतम नगरों में से है, यहाँ पर जल देवता और ज्ञान देवता 'एन्की' के मन्दिर थे, कहा जाता है यहीं हाथ की कारीगरी और लिपि के आविष्कारक थे।

'नसीरियाह'

बहुत से 'धराशाही' नगरों को देखने के बाद नसीरियाह के भ्रमण से सुख मिलेगा—यह वर्तमान कालीन नगर है, यह नसीरपाशा द्वारा १८७० ई० स० में निर्माण किया गया था, इसकी चतुष्कोण बनाती हुई चौड़ी सड़कें प्राचीन नगरों की टेढ़ी-मेढ़ी चक्करदार गलियों से विभिन्नता दिखाती हैं: उर जंक्शन से यह १० मील है।

देश दर्शन

'तेल-ओ'

यह प्रसिद्ध नगर राज्य ई-पू०-३००० में स्थापित हुई थी—सैकड़ों वर्षों तक व्यापार का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है, 'उर के तीसरे राज्यवंश के प्रसिद्ध नरेश गुडीया के काल में बहुत प्रसिद्धि प्राप्त किये हुये था यहाँ बहुत सी मूर्तियाँ, सुमोयिन कला की श्रेष्टतम कृतियां पाई गई हैं तेल-ओ के दूह, शट्ट, अल, हयी के तट पर हैं, इसके स्मृति चिन्ह, सेमेटिक ढंग पर बने हुये, अक्कादों के सरगोन के काल के हैं।

'मुहर्रम'

प्रति वर्ष शिया मुसलमान करबला की रण भूमि पर धोखे से मारे गये हुसैन की मृत्यु का मातम मनाते हैं कर्बला का अर्थ है "शोक का नगर"

इतिहास यह है कि अब्बासी खलीफा यज़ीद ने जबर्दस्ती शासन हथिया लिया था कूफ़ा के निवासियों के कहने पर हुसैन मुहम्मद साहब का नाती अपने बाल बच्चों और अनुगतों के साथ आये लेकिन कूफ़ा वासियों

ने विश्वास घात किया खलीफ़ा ने मुहर्रम के दसवें दिन बड़ी सेना भेज कर स्त्री, बच्चों, बूढ़ों समेत सब का कत्ले आम करवा दिया, यह दर्दनाक क़त्ले आम विस्मृत नहीं होता सब कर्बला के गुम्बद के नीचे समधिस्थ हैं मुहर्रम के दसवें दिन तब से मातम मनाया जाता है, मुहर्रम का जलूस अनोखी चीज़ है—आगे आगे छाती पीटने वाले 'हाय हुसैन' कहते हुये छाती कूटते हैं—उसके बाद ज़ंजीरों से शरीर पीड़ित करने वालों का दल होता है उसके बाद सजे हुये घोड़ों पर सवार बच्चों की कतार (मानों हुसैन के परिवार के बच्चे हों) अनेकों पंक्ति यद्यपि पुराने समय के समान जलूस में अब उतनी शरीर को पीड़ा देने वाले प्रदर्शन नहीं होते फिर भी बग़दाद, बसरा खदीयां में यह देखने योग्य हैं।

शिया और सुन्नी

मुहम्मद साहब के कोई पुत्र नहीं था—उनके चार प्रमुख अनुगामियों में से अबूबक्र पहला ख़लीफा मुहम्मद साहब की मृत्यु के उपरान्त हुआ उसके बाद दूसरा ख़लीफा उमर हुआ उसमान तृतीय और अली चौथा

खलीफा हुआ अली मुहम्मद साहब का दामाद भी था अली को कूफ़ा में मार डाला गया। और उनके छोटे पुत्र हुसैन को कर्बला में खिलाफ़त को पुनः मुहम्मद के वंश में रखने के प्रयत्न स्वरूप मार डाला गया अली और हुसैन शहीद की इज्जत से देखे गये वे शिया कहलाये क्योंकि वे मुहम्मद के घराने का ही खिलाफ़त का अधिकारी समझते थे उनका कहना था कि खिलाफ़त दैवी अधिकार से रूप मुहम्मद साहब द्वारा अली को दी गयी और उसके बाद उसके वंश को।

कर्बला दूसरा पवित्र नगर

समाधि-मन्दिर का गुम्मद सोने के मोट परत से मढ़ा हुआ है यहाँ स्वयं हुसैन का शव रक्खा है पास के छोटे गुम्बद के तले हुसैन के सौतेले भाई अब्बास का शव हैं वह भी हुसैन के साथ करबला की भूमि पर मारा गया था अरब निवासी उन समधियों पर कठोर शपथें लेतें हैं उनका विश्वास है कि यदि कोई झूठी शपथ लेता है तो उस पर खुदा का कोप होता है।

नजफ़—प्रथम पवित्र नगर

शिया मुसलमानों के लिये नज़फ़ का स्थान पवित्रता और महत्व में केवल मक्का के बाद है, उनकी आस रहती है कि वे यहीं दफ़नाये जायें यहाँ हज़रत अली का शव दफनाया हुआ है, क़ब्र के ऊपर बनी हुई मस्जिद की कारीगरी अद्भुत है गुम्बद और मीनारें सोने के पत्तरों से मढ़ी हुई हैं—ये स्वर्ण पत्र हवा में उड़ते हुये एक ऐसा सुनहरा धुन्ध पैदा कर देते हैं जो सूर्य की रोशनी में ४० मील दूर से भी चमकता दिखाई पड़ता है, यह समाधि स्तूप जो 'एलहदारत' या अली की उपस्थिति कहलाता है दीवारों से क़िले बन्द शहर की तरह घिरा है यद्यपि यह संकरी चक्करदार सड़कों के घेरे में है तामी बहुत सुन्दर और शानदार मालूम होता है, प्राचीन काल में कोई भी विदेशी इस नगर में नहीं घुस सकता था। यहां की आबादी भूमि के अन्दर ४० फीट नीचे बने मकानों में रहती हैं ये मकान अन्दर ही अन्दर एक दूसरे से सम्बन्धित हैं—नजफ़ की तीव्र गर्मी ही वहां के ४५००० निवासियों को भूमि के अन्दर मकान

बनाने को वाध्य करती है करबला से यह स्थान ५० मील दूर है।

उखैदीर

सातवीं सदी का बना हुआ दुर्ग जैसा महल मरुभूमि के बीचो बीच खड़ा, बड़ा शानदार लगता है। आरम्भ में यह तीन मंजिल का था लेकिन अब दुखण्डा ही बच रहा है बीच में एक बड़ा हाल, उसके चारों तरफ अनेकों छोटे बड़े कमरे हैं यह सारी इमारत एक दुहरी दीवार से घिरी है।

कूफ़ा

कूफ़ा शाप ग्रसित नगर है—विश्वासघात और धोखाधड़ी ही इसका इतिहास है यहां के निवासियों ने हजरत मुहम्मद के दामाद को जब वह नमाज़ पढ़ रहा था धोखे से कत्ल कर दिया था—इन्ही के विश्वासघात के कारण अली के पुत्र और उसके अनुयायियों की कत्लेआम हुआ था अली के पर पोते जैद को भी उन्होंने

धोखा दिया और मार डाला था नगर के क़िले बन्दी की दीवारें आज के ज़माने की है केवल मस्जिद की मीनार प्राचीन काल की है कूफ़ा अरबी व्याकरण इस्लामी दर्शन का महत्व पूर्ण केन्द्र रहा।

उत्तरी इराक़ की यात्रा

पुराने समय में यातायात के ठीक साधन न होने के कारण यह यात्रा बड़ी भयानक थी लेकिन इराक की रेलगाड़ियों के सुन्दर प्रबन्ध के कारण हर कहीं बड़े आराम और आसानी से पहुँचा जा सकता है।

अशुर

असीरियन साम्राज्य की प्राचीन राजधानी के खण्डहरों को देखने के लिये बायजी जंक्शन होकर जाया जाता है अशुर के वर्तमान नाम कलात, शेरगट है यह दजला के पश्चिमी तट पर पथरीली भूमि पर स्थित है पहले पहल इसका वर्णन 'उर नरेश' डुन्गी के काल

में मिलता है। देवी इश्तार यहां की नगर रक्षक देवता थी।

इश्तार के मन्दिर की खुदाई से अशुर की प्राचीन तम संस्कृति के बारे में पता लगता है इश्तार मन्दिर में पायी गयी पुरातत्व की वस्तुयें उतनी ही प्राचीन है जितनी कि शैल्डीज़ के 'उर' की।

'अशुर' जिसे ये युद्धदेवता कहते थे पुरोहितों द्वारा महान 'भू-देव' 'एनलिल' भी कहा जाता था मन्दिर का ऊंचा ज़िगुरात खण्डहर के टीले की अब भी विशेष चीज़ है पास ही खुदाई से निकली हुयी सड़कों का जाल, मकान और स्नानघर दिखाई पड़ते हैं।

हटरा

'बाई जी' से ८० मील दूर है जैसी फ़ोन की महान मेहराब के अतिरिक्त शायद ईराके किसी भी खण्डहर से इस उदास से पर्थियन नगर की तुलना नहीं हो सकती, यहां के भग्नावशेष बहुत ही सुरक्षित दशा में हैं

लेकिन घोर मरुथल में होने के कारण बहुत कम यात्री इस ओर जाते हैं।

समर्राः चतुर्थ पवित्र नगर

इसका इतिहास २५०० ई० पुराना है लेकिन इसके प्राचीन गौरव का बहुत कम चिन्ह अब शेष है। बग़दाद के खलीफा मुतासिम ने ८३६ ई० स० में इसे अपनी राजधानी बनाया। ५० साल तक खलीफाओं ने इस नगर की सुन्दरता में वृद्धि की, नदी के किनारे किनारे २० मील तक शहर फैला हुआ था लेकिन खलीफा मुतासीद के बग़दाद वापस चले जाने पर यहां के अद्-भुत भवन एक के बाद एक खण्डहर में परणित होने लगे। उत्तर की ओर मुतावक्किल मस्जिद की मीनार है जो ८५० ई० स० में बनी थी, ऊपर पहुँचने को घुमाव-दार रास्ता है दजला के दूसरे किनारे पर एक महल के खंडहर हैं उसे 'बेलइल अमरिक कहते हैं।

समर्रा का समाधि-मन्दिर नजूफ के रंग पर बनाया गया है पर सुन्दर सुनहरा गुम्बद १० वें और ११ वें इमाम की कब्रों के ऊपर बना है एक छोटा गुम्बद है

जिसके नीचे वह गुफा है जहाँ से मुसलमानों के १२ वर्षीय बारहवें इमाम मुहम्मद बेन-हसन एल-महदी अन्तर्ध्यान हो गये थे और जिनके विषय में मुसलमानों का विश्वास है कि इस्लाम को सारी दुनियां पर विजय की घोषणा करने के लिये फिर प्रकट होंगे।

जूलियन की कब्र—शहर के बाहर बालू का एक ऊँचा टीला है जिसके बारे में कहा जाता है। कि अपास्टेट जूलियन जो अत्यन्त बुरा था उसके शरीर को ढके है बग़दाद से समर्रा की दूरी ७४ मील है।

किरकूक

किरकूक अत्यन्त प्राचीन नगर है अन्य मेसोपोटामियन नगरों की भांति यह भी पुराने शहरों के भग्नावशेषों के ढेर पर बसा हुआ है नगर के प्राचीन और वर्तमान भाग नदी द्वारा विभाजित किये हुये हैं वर्तमान नगर भाग में सराय, बैंक और व्यापार केन्द्र, स्कूल आदि हैं किरकूक में एक आर्क विशप रहता है हज़रत दानियल की मास्जिद मीनार दूर से दिखाई देती है।

बाबा गुरगुर

इस स्थान में 'तीन बच्चे' 'शदराख़', में श,ख और आबेद-नेगों को बाईबिल की ज्वलंत भट्टी में फेंक दिया गया था लेकिन इस कथा को यद्यपि पेट्रोल निकालने, वाली तुर्की पेट्रोलियन कम्पनी के कार्यों से मालूम हो सकता है ज़मीन के नीचे पेट्रोल होने के कारण उसके गैस के वायु के सम्पर्क में आते ही लपटें निकलती होंगी।

———

तरकलान

यह स्थान किरकूक से १४ मील दूर है मितान्नी के प्राचीन राज्य के खण्डहरों का यह स्थान है यहां पर ३००० से लगभग टिकियें मिली हैं जिनसे मितन्नी लोगों की ऊँची सभ्यता का पता मिलता है मकानों में सुन्दरता के बजाय आराम का अधिक ध्यान रक्खा जाता था संगमरमर के स्नान घर थे।

———

'अरबिल'

किरकूक से ६५ मील दूर है मेसोपोटामियां का केवल यही एक प्राचीन टीला है जहाँ आबादी है और जिसने अपना पुराना नाम जारी रक्खा है। पास ही इतिहास की प्रसिद्ध निर्णायक लड़ाई दारा और सिकन्दर के बीच लड़ी गयी थी।

कराधान—यहां नफ्तखानाह के प्रसिद्ध तैल-क्षेत्र हैं।

———

मोसूल (मूसल)

बग़दाद से २७० मील दूर है आर्थिक दृष्टि से मोसूल का महत्व बहुत बड़ा है यहां अभी ऐसे बहुत से तैल-क्षेत्र हैं जो अभी छुये नहीं गये और यहां ईराक के अन्य भागों से अधिक उपजाऊ भूमि पहाड़ की तलहटी में है जहां से गल्ला-जानवरों की खालें, मेवे और गोंद बाहर भेजी जाती है।

इस प्रदेश में सुन्नी मुसलमान, कुर्द, अरब ईसा और

अन्य मतावलम्बी रहते हैं इस भाग का शासन करना एक ख़ास समस्या हमेशा रही है।

मोसूल वर्तमान इराक़ का तीसरा महत्वपूर्ण नगर है। दजला नदी के दहिने तट पर तिनेवेद प्राचीन नगर के स्थान के ठीक सामने है बनावट में यह इराक़ का सब से सुन्दर नगर है सड़कें चौड़ी हैं और संगमरमर की पट्टियां दोनों तरफ हैं शहर में बिजली की रोशनी है मोसूल १० वीं सदी में खलीफाओं की राजधानी थी सलादीन ने इसपर हमला किया था फिर मुग़लों के हाथ में आया था मोसूल नगरों की रानी कहलाता था।

मोसूल एक बड़ा खेतिहर प्रदेश है यहां फलों, भेड़ों, दालें और बकरियों की मण्डी है संसार में प्रसिद्ध महीन कपड़ा मसलिन (मलमल) यहीं बनता था इस-लिये इसका नाम मोसूल पड़ा था। चमड़े और धातु के बर्तनों का काम भी अच्छा होता है।

मोसूल बहुत कुछ हिन्दुस्तान के शहरों जैसा लगता है शहर की ओर जाने वाले पुल पर प्राचीन और वर्त-मान पूर्व और पश्चिम का अजीब संयोग सा दिखता है

बैलगाड़ियों, ऊंटों की कतार और भेड़ बकरियों के झुण्ड के बीच से पों-पों कर सर्र से भाग जाती हुई मोटरें।

मोसूल उनके धर्मों और धार्मिक विश्वासों का केन्द्र है और इन सब धर्मों के उपासनागृह चर्च आदि देखने की चीजें हैं।

नगर के मध्य में एक अति प्राचीन मस्जिद है जो अपनी झुकी मीनार के कारण प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि हज़रत मुहम्मद के बहिश्त जाते समय उनके सम्मान में झुक गयी थी इसके झुकाव का कोण पीसा की प्रसिद्ध झुकी हुयी मीनार से भी अधिक बड़ा है यह २०० फीट से भी अधिक ऊँची है मस्जिद के आंगन में एक बहुत कारीगरी का फ़व्वारा है।

नेबीशित की मस्जिद दूसरी प्रसिद्ध इमारत है इसे ईसाई मिस्त्रियों ने बनाया था अपने धर्म के 'पवित्र त्रयी' होलीट्रिनिटी के स्मृति स्वरूप उन्होंने मीनार में प्रचलित दो दर्ज्जों के स्थान पर तीन रक्खे थे इसी प्रकार के अन्य प्राचीन चर्च जैसे भार शिमोन 'मिरिकन्ता' आदि।

इमाम चटिया की समाधि जो सुल्तान बद्र-एद्दीन

लूलू ने उत्तर द्वार के पास बनवाई, अपने गुम्बद रहित विशेषता के कारण प्रसिद्ध—इसमें गुम्बद के स्थान पर एक अठ खूंटा स्पायर है।

बग़दाद की तरह मोसूल में भी युद्ध के समय नगर के बीचों बीच जाती एक सड़क का निर्माण हुआ था इसका नाम निनेवेह स्ट्रीट है।

'निनेवेहः' सल्तनतों का गौरव

मोसूल नगर के सामने दो बड़े टीले हैं इनका नाम है 'कोयुनजिक' और 'नेबीयूनिस' येही निनेवेह के गौरव के चिन्ह शेष हैं इस नगर की नींव सीरिया के प्रथम वीर और नरेश 'नीनस' द्वारा डाली गयी थी। बैबीलोन की तरह इसकी भी कुछ निशानी नहीं बची है। यहां की ईंट गारे से मोसूल नगर का निर्माण हुआ राजा सेन्नाचेरिब और अशुर-बनी-पाल के विशाल महलों के स्थान खोज लिये गये हैं। १८४५ की खुदाई में अनेक महत्वपूर्ण 'टेबलेट्स' मिली हैं जिनसे निनेवेह की विशाल शाही पुस्तकालय का पता लगा है। सबसे अधिक आश्चर्यजनक बैबीलोनिया की बाढ़ विषयक

टिकियें हैं जिनसे बाईविल में वर्णित 'प्रलय' की बात पक्की हो जाती है।

नेबी यूनिस

छोटा टीला जिसे नेबीयूनिस पुकारते है अपने अन्दर 'इश्तार' के मन्दिर को छिपाये हुये है। इसकी खुदाई नहीं होसकी क्योंकि इसके ऊपर हज़रत जोनाह की कब्र है।

ख़ोरसा बाद

इसका प्राचीन नाम दर-शर्रुकिन था। सारगान द्वतीय ने यहाँ अपना महल बनाया था। महल की दीवारें जिन पर (४४) तरह की आकृतियाँ बनी हैं। मन्दिर का द्वार और पैर धोने का हौज़ अब भी है।

निमरूद

मोमूल से २० मील दूर है। इसका पुराना नाम

'कैलाह' था। यहां पर प्राचीन काल में सीरिया की राजधानी थी।

मार-बेहनाम

ईसाई धर्म का प्रचार मेसोपोटामिया में जिन ईसाई सन्तों ने किया था उस काल के कुछ गिर्जे हैं जो अब तक प्रचीन काल का उपासना ढंग अपनाये हुये हैं। उनमें से विशेष महत्व का 'मार बेहनाम' (सेंट जार्ज) है यह अति प्रचीन गढ़-बन्दी वाला गिर्जा है जो चारों ओर ऊँची दीवारों से घिरा है पुराने गिर्जे का जोकि चौथी सदी में बना था बहुत कम अंश शेष है अब जो गिरजा है वह १२वीं सदी का बना हुआ है। चर्च के मेहराबों और दरवाज़ों पर बड़ा अच्छा जाली का काम है।

काराकिश

यह दूसरा अत्यंत प्राचीन गिर्जा है एक अजीब सी बात यहां देखने में आती है साल में एक बार एक घंटे

तक दीवार पर एक स्त्री और उसके बच्चों की छाया दिखाई पड़ती हैं। किसी ने अब तक इस रहस्यमय छाया के कारण का पता नहीं लगा पाया है। इस चमत्कार को देखने के लिये प्रति वर्ष यहां मेला सा लग जाता है। स्त्रियाँ यहां सन्तान के लिये प्रार्थना करती हैं।

अल-कोष और रब्बन होरमुज़्द का विहार (मोनास्टरी)

मोसूल से दजला का बांका-पुल पार कर दाहिने मुड़ने वाली राह पर तैल कैफ़, बटनै, तैल उसकाफ़ आदि गांव पार करने पर अल-कोष गांव है आध मील दूर अलकोष का बड़ा विहार है। इससे आगे ऊंचाई पर रब्बन होरमुज़्द का प्राचीन और प्रसिद्ध विहार है। किसी समय में यह १३०० भिक्षुओं के रहने का स्थान था लेकिन अब केवल ४ भिक्षु रहते हैं जिनके ऊपर गिरजे की (शाका) भार है।

दोहक और ज़ैखो

अलकोष से १० मील पर मोमूल से ज़ैखो जाने वाली सड़क पर स्थित दोहक की चट्टानें हैं यहाँ सीरियन शिल्पकला शैलमनेसर के ऐतिहासिक काल का दृश्य बताती हुयी हैं। ज़ैखो का प्रचीन नगर ३० मील और आगे है। नगर का प्राचीनतम भाग नदी के बीचोबीच एक द्वीप पर है जहां पर एक बहुत पुराने पुल से होकर जाया जाता है।

बेविअन

यहाँ कि विशालकाय चट्टानों में से ही सीरिया की बड़ी बड़ी शिल्पकला की चीज़ों का निर्माण हुआ है। बहुत सी अधबनी, टूटी फूटी मूर्त्तियां पड़ी मिलेंगी जो किसी मन्दिर या महल में सजने के लिये तैयार हुयी थीं।

शैतान-पूजक

जितने भी मतावलम्बी मोसूल प्रदेश में हैं उनमें

सबसे अजीब शैतान की पूजा करने वाले येज़िदी लोग हैं इनकी ६०,००० के लगभग है ये लोग यद्यपि ईश्वर की उपासना करते हैं तो भी जिसे हम शैतान कहते हैं उसकी पूजा भी करते हैं, वे लोग कभी शैतान नाम अपने मुँह से उच्चारण नहीं करेंगे न कोई ऐसा शब्द बोलेंगे जो 'श' सुशुरू या 'तान' पर खत्म हो शेख आदी की दरगाह जिसमें जाने का रास्ता एक पत्थर की सुरंग में से होकर है यहां की प्रसिद्ध चीज़ 'मोर' येज़िदी लोगों की पवित्र पक्षी है।

बसरा: इराक का बन्दरगाह

बसरा इराक का बन्दरगाह है और बग़दाद के बाद दूसरे नम्बर का शहर है, आज का बसरा और पुराना बसरा 'अशेर' शट्ट-एल अरब नदी के किनारे पर बसे हैं यह धारा ६० मील बाद पर्शियन गल्फ में मिली है। व्यापारिक महत्व के दफ़्तर बैंक आदि 'अशेर' में हैं व्यापारी ज़हाज़ और दूसरे स्टीमर यहां आकर लंगर डालते हैं।

बग़दाद-दर्शन

प्राचीन बसरा ६३६ ई० स० में ख़लीफ़ा उमर ने बसाया था यहीं पर इस्लामी दर्शन के प्रथम विद्यालय स्थापित हुये थे। प्राचीन बसरा में अलिफ़ लैला के सिन्दबाद सेलर का घर था। अब्बासी खलीफ़ाओं के काल में 'बसरा' अपने गौरव की चरम सीमा पर था अब्बासियों के पतन के बाद बसरा का भी क्षय होने लगा।

बसरा दुनिया का सबसे बड़ा खजूर निर्यात करने वाला बन्दरगाह है। बहुत लोग नहरों और अजीब तरह की नावों की अधिकता के कारण इसे 'पूर्व का वेनिस' कह देते हैं। नगर का पुराना भाग पत्थरों का बना हुआ है, बसरा की सही ज़िन्दगी उसके फलों, तरकारियों और मछलियों के बाज़ार में देखी जा सकती है। बग़दाद से उसकी दूरी ३६४ मील है।

ज़ुबीर

ज़ुबीर प्राचीन बसरा के स्थान पर बना हुआ प्राचीन शहर है। इसमें अभी नवीनता की झलक देखने को भी नहीं आई है, मस्जिद की पतली नीले रंग

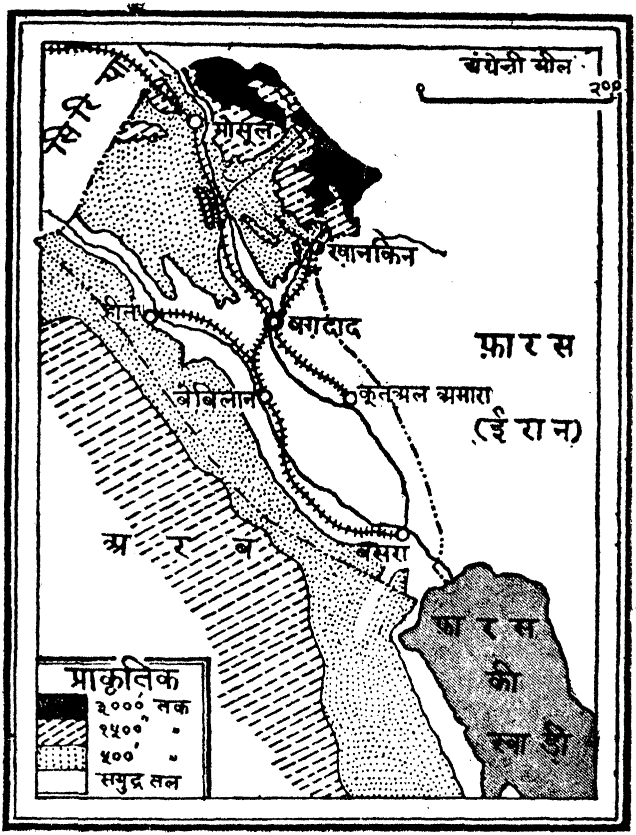
की मीनार दूर से दिखाई देती है। शहर के बाहर एक गोल गुम्बद के खंडहर मिलते हैं जिसे सिन्दबाद की मीनार कहते हैं यहाँ सिन्दबाद का शव गड़ा हुआ बताया जाता है। उसका घर शहर में था, शहर की सड़कें संकरी घुमावदार हैं मकान की दीवारें मिट्टी की बनी हैं उनके द्वार केवल सड़क की ओर है।

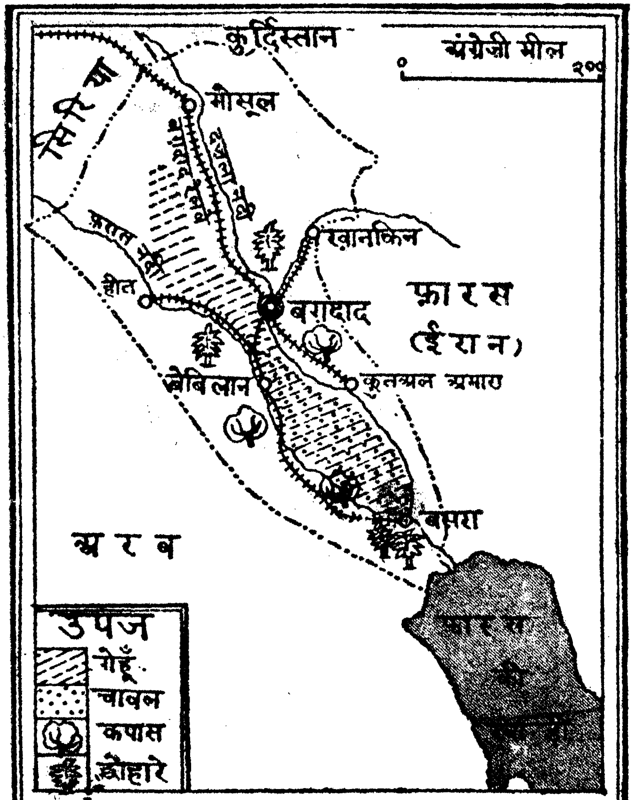
'कुवेत'

पर्शियन गल्फ में एक द्वीप पर बसा हुआ अच्छा शहर है यहाँ 'बिदूइन' लोगों की आबादी है मोती निकालना और बाहर भेजना यहाँ का मुख्य व्यापार है। बाज़ार में मोती और टरक्वायज़ के आभूषण प्राचीन 'उर' के नमूने के मिलते हैं। अमेरिकन मिशनरियों ने यहाँ एक बहुत अच्छा अस्पताल खोल रक्खा है।

'शैबाह'

यहाँ पर एक बहुत बड़ा हवाई अड्डा है। यहीं पर


अंग्रेज़ी मील
२००
मोसूल
खानकिन
हीत
बग़दाद
फ़ारस
(ईरान)
बेबिलान
कूतल्अल अमारा
बसरा
अ र ब
फ़ारस की खाड़ी
प्राकृतिक
२०००' तक
१५००' "
५००' "
समुद्र तल


कुर्दिस्तान
अंग्रेज़ी मील
०
२००
सीरिया
मौसूल
दजला नदी
फ़रात नदी
खानकिन
हीत
बग़दाद
फ़ारस
(ईरान)
बेबिलान
कुतअल अमारा
बसरा
अरब
उपज
गेहूँ
चावल
कपास
छोहारे

१९१४ में तुर्कों के खिलाफ़ बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी गयी थी।

कुट:—बग़दाद से बसरा समुद्री रास्ते से जाने पर 'कुट' का दुर्भाग्यशाली शहर है आगे सुन्दर 'समारा' क़सबा है दाहिने तरफ 'एज़रा' की क़ब्र है।

मॉड होटल:—दजला के पश्चिमी तट पर बसा हुआ मांड पुल के पास बना हुआ बहुत सुन्दर होटल है। जुलाई के गर्म से गर्म मौसम में होटल के बग़ीचे में रातें बहुत शीतल होती हैं।

कुर्द लोग:—बग़दाद में कुलियों का काम करने वाले कुर्द लोगों के झुण्ड के झुण्ड बड़े अजीब से लगते हैं। गर्मियों में वे सड़कों पर पड़े रहते हैं।

'भूगोल' का स्थायी साहित्य

१—भारतवर्ष का भूगोल	२।)	१९—चीन-अंक	१)
२—भूतत्व	१।)	२०—चीन-एटलस	॥)
३—भूगोल एटलस	१॥)	२१—टर्की	१)
४—भारतवर्ष की खनिजात्मक सम्पत्ति	१)	२२—अफ़ग़ानिस्तान	१)
५—मिडिल भूगोल भाग १—४ मूल्य प्रत्येक भाग	॥=)	२३—भुवनकोष	१)
		२४—एबीसीनिया	॥)
		२५—गंगा-अंक	१)
		२६—गंगा-एटलस	॥)
		२७—देशी राज्य-अंक	२)
६—हमारा देश	।=)	२८—पशु-पक्षी-अंक	१)
७—संक्षिप्त बालसंसार (नया संस्करण)	१)	२९—महासमर-अंक	१।)
		३०—महासमर एटलस	॥)
८—हमारी दुनिया	।-)	३१—सचित्र भौगोलिक कहानियां	।)
९—देश निर्माता	।-)		
१०—सीधी पढ़ाई पहला भाग	।)	३२—पशु-परिचय	॥)
११—सीधी पढ़ाई दूसरा भाग	।)	३३—प्राचीन जीवन	॥)
१२—जातियों का कोष	।)	३४—भूपरिचय (संसार का विस्तृत वर्णन)	२॥)
१३—अनोखी दुनिया	॥=)		
१४—आधुनिक इतिहास एटलस	॥)	३५—मेरी पोथी	॥=)
१५—संसार-शासन	२)	३६—आसाम-अंक	१)
१६—इतिहास-चित्रावली (नया संस्करण)	१)	३७—द्वितीय महासमर-परिचय	१॥)
		३८—संयुक्त प्रांत-अंक	३॥)
१७—स्पेन-अंक	॥-)	३९—महासमर दैनन्दिनी डायरी	१)
१८—ईरान-अंक	१)	४०—भारतीय भाषाएँ	१)

मैनेजर, "भूगोल"-कार्यालय ककरहाघाट इलाहाबाद।